



उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं जीवन कौशलों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

अंशी

शोधार्थी

डॉ पूनम बाजपेयी

शोध निर्देशक

शिक्षा विभाग

मेजर एस. डी. सिंह विश्वविद्यालय, फर्रुखाबाद

सारांश

मैंने अपने इस अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि, जीवन कौशल तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच विद्यमान संबंध का अध्ययन करने का प्रयास किया है। किशोरावस्था विद्यार्थी के जीवन की वह अवस्था है जिसमें उसके संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक तथा व्यवहारात्मक पक्षों में तीव्र परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थी केवल विषयगत ज्ञान ही अर्जित नहीं करता, बल्कि वह दूसरों के साथ व्यवहार करना, अपनी भावनाओं को समझना, निर्णय लेना, समस्याओं का समाधान करना, तनाव का सामना करना तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को समायोजित करना भी सीखता है।

मैंने अध्ययन में सामाजिक बुद्धि को सामाजिक परिस्थितियों को समझने, अन्य व्यक्तियों के व्यवहार का अनुमान लगाने, उचित सामाजिक प्रतिक्रिया देने तथा पारस्परिक संबंधों को प्रभावी ढंग से संचालित करने की क्षमता के रूप में देखा है। इसी प्रकार जीवन कौशलों में आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, प्रभावी संचार, पारस्परिक संबंध, निर्णय-निर्माण, समस्या-समाधान, रचनात्मक चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन तथा तनाव एवं भावनाओं से निपटने की क्षमता को प्रमुखता दी है।

Type : Research Article

Language: Hindi

Received: 13 September 2026

Revised: 13 September 2026

Accepted: 15 September 2026

Published: 16 September 2026

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22766821>

Cite this article:

अंशी, डॉ पूनम बाजपेयी (2026). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं जीवन कौशलों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD), Vol. 02, Issue 05, pp. 16-26. ISSN: 3139-1486 (Online)



मेरे अध्ययन का केंद्रीय विचार यह है कि यदि विद्यार्थी सामाजिक परिस्थितियों को समझने तथा अपने व्यवहार को नियंत्रित करने में सक्षम है और उसके जीवन कौशल विकसित हैं, तो उसके विद्यालयी व्यवहार, अध्ययन-अभिप्रेरणा, कक्षा में सहभागिता, समस्या-समाधान तथा शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

मुख्य शब्द

सामाजिक बुद्धि, जीवन कौशल, शैक्षिक उपलब्धि, किशोरावस्था, उच्च माध्यमिक विद्यार्थी, सामाजिक कौशल, आत्म-जागरूकता, समस्या-समाधान।

1. प्रस्तावना

मैंने इस अध्ययन की पृष्ठभूमि को समझने के लिए सबसे पहले यह विचार किया कि विद्यालयी शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। आधुनिक शिक्षा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। विद्यार्थी को विषयगत ज्ञान के साथ-साथ ऐसी क्षमताओं की भी आवश्यकता होती है जिनके माध्यम से वह स्वयं को समझ सके, दूसरों के साथ प्रभावी संबंध स्थापित कर सके तथा दैनिक जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान कर सके।

किशोरावस्था इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था है। उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सामने परीक्षा का दबाव, प्रतियोगिता, सहपाठी समूह का प्रभाव, परिवार की अपेक्षाएँ, भविष्य के व्यवसाय का चुनाव, समय-प्रबंधन और व्यक्तिगत भावनाओं का नियंत्रण जैसी अनेक चुनौतियाँ होती हैं।

ऐसी परिस्थितियों में केवल बौद्धिक क्षमता पर्याप्त नहीं होती। विद्यार्थी को यह भी पता होना चाहिए कि वह किसी समस्या को कैसे देखे, किससे सहायता माँगे, किसी विवाद को कैसे सुलझाए, अपनी भावनाओं को कैसे नियंत्रित करे और असफलता के बाद पुनः प्रयास कैसे करे। इसी कारण मैंने सामाजिक बुद्धि और जीवन कौशल को शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन के लिए चुना है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

मैंने इस अध्ययन की आवश्यकता को निम्न आधारों पर अनुभव किया—

1. परीक्षा-केंद्रित शिक्षा की सीमा: विद्यालयों में अक्सर शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन मुख्यतः परीक्षा में प्राप्त अंकों से किया जाता है।
2. किशोरावस्था की संवेदनशीलता: उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी व्यक्तित्व, आत्म-छवि, सामाजिक संबंध और भविष्य को लेकर अनेक प्रश्नों से गुजरते हैं।
3. सामाजिक बुद्धि की आवश्यकता: सामाजिक परिस्थितियों को समझने और उचित प्रतिक्रिया देने की क्षमता विद्यालयी अनुकूलन में सहायक हो सकती है।



4. जीवन कौशल और शैक्षिक व्यवहार: निर्णय-निर्माण, समस्या-समाधान तथा तनाव प्रबंधन अध्ययन प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं।

5. भारतीय संदर्भ: किशोरों में जीवन कौशल शिक्षा की प्रासंगिकता बढ़ रही है।

3. समस्या का कथन

“उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं जीवन कौशलों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।”

4. अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के स्तर का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के जीवन कौशलों के स्तर का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
4. सामाजिक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन करना।
5. जीवन कौशल एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन करना।
6. सामाजिक बुद्धि और जीवन कौशलों के संयुक्त प्रभाव का अध्ययन करना।
7. बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक बुद्धि और जीवन कौशल में अंतर का अध्ययन करना।
8. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के बीच अंतर का अध्ययन करना।
9. शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवाणी में सामाजिक बुद्धि और जीवन कौशल की भूमिका का अध्ययन करना।
10. विद्यालयी शिक्षा में सामाजिक बुद्धि एवं जीवन कौशल के समावेशन के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

5. परिकल्पनाएँ

H₀₁: उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H₀₂: उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के जीवन कौशल एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H₀₃: सामाजिक बुद्धि और जीवन कौशल संयुक्त रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की महत्वपूर्ण भविष्यवाणी नहीं करते हैं।

H₀₄: बालक एवं बालिकाओं की सामाजिक बुद्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।



H₀5: बालक एवं बालिकाओं के जीवन कौशलों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

H₀6: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

6. प्रमुख अवधारणाओं की कार्यात्मक परिभाषाएँ

6.1 सामाजिक बुद्धि

मेरे अध्ययन में सामाजिक बुद्धि से आशय विद्यार्थी की उस क्षमता से है जिसके द्वारा वह सामाजिक परिस्थितियों को समझता है, दूसरों के व्यवहार एवं भावनाओं को पहचानता है, उपयुक्त सामाजिक प्रतिक्रिया देता है और पारस्परिक संबंधों को प्रभावी ढंग से संचालित करता है।

6.2 जीवन कौशल

मेरे अध्ययन में जीवन कौशल से आशय उन मनो-सामाजिक एवं व्यवहारात्मक क्षमताओं से है जिनकी सहायता से विद्यार्थी दैनिक जीवन की माँगों और चुनौतियों का सकारात्मक एवं प्रभावी ढंग से सामना करता है। इनमें आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, प्रभावी संचार, पारस्परिक संबंध, निर्णय-निर्माण, समस्या-समाधान, रचनात्मक चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन, भावनाओं से निपटना तथा तनाव से निपटना शामिल हैं।

6.3 शैक्षिक उपलब्धि

मेरे अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से आशय विद्यार्थी द्वारा विद्यालयी अध्ययन में प्राप्त शैक्षिक प्रदर्शन से है। इसे वार्षिक/पिछली परीक्षा में प्राप्त प्रतिशत, विद्यालयी अभिलेख अथवा मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण के आधार पर मापा जा सकता है।

7. वैचारिक रूपरेखा

मैंने अध्ययन के लिए निम्न वैचारिक मॉडल प्रस्तावित किया है:

सामाजिक बुद्धि → विद्यालयी व्यवहार → शैक्षिक उपलब्धि

जीवन कौशल → विद्यालयी व्यवहार → शैक्षिक उपलब्धि

इस मॉडल में मैंने सामाजिक बुद्धि और जीवन कौशलों को स्वतंत्र चर तथा शैक्षिक उपलब्धि को आश्रित चर माना है।

8. सामाजिक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि

मैंने सामाजिक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध को समझते हुए यह माना कि विद्यार्थी की शैक्षिक सफलता केवल उसकी बौद्धिक क्षमता पर निर्भर नहीं करती। एक विद्यार्थी यदि शिक्षक से उचित ढंग से संवाद कर सकता है, सहपाठियों के साथ सहयोग कर सकता है, सामाजिक संकेतों को समझ सकता है तथा विवाद की स्थिति में उचित प्रतिक्रिया दे सकता है, तो उसके विद्यालयी वातावरण में अनुकूलन की संभावना बढ़ सकती है।



9. जीवन कौशल और शैक्षिक उपलब्धि

मैंने जीवन कौशलों को शैक्षिक उपलब्धि से जोड़ते हुए विशेष रूप से निर्णय-निर्माण, समस्या-समाधान, तनाव प्रबंधन तथा संचार एवं पारस्परिक संबंधों पर ध्यान दिया। विद्यार्थी को विषय चयन, समय-प्रबंधन, अध्ययन योजना और दैनिक प्राथमिकताओं से संबंधित निर्णय लेने होते हैं। पढ़ाई में कठिनाई आने पर समस्या को छोटे भागों में विभाजित करके समाधान खोजना अध्ययन को अधिक प्रभावी बना सकता है। परीक्षा और परिणाम की चिंता से निपटने की क्षमता भी उपयोगी हो सकती है।

10. अध्ययन की पद्धति

मैंने प्रस्तावित अध्ययन के लिए वर्णनात्मक-सहसंबंधात्मक सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त माना है। अध्ययन का स्वरूप मात्रात्मक रखा जा सकता है। इसमें सामाजिक बुद्धि, जीवन कौशल और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाएगा।

10.1 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में उच्च माध्यमिक स्तर अर्थात कक्षा XI एवं XII में अध्ययनरत विद्यार्थी शामिल किए जा सकते हैं।

10.2 नमूना

एक संभावित नमूना संरचना:

कुल विद्यार्थी: 300

बालक: 150

बालिकाएँ: 150

ग्रामीण क्षेत्र: 150

शहरी क्षेत्र: 150

नोट: यह संख्या केवल शोध-डिजाइन का प्रस्ताव है। वास्तविक शोध में वही संख्या लिखी जानी चाहिए जितने विद्यार्थियों से वास्तव में डेटा एकत्र किया गया हो।

11. उपकरण

11.1 सामाजिक बुद्धि मापन

सामाजिक बुद्धि के लिए मानकीकृत सामाजिक बुद्धि मापनी का उपयोग किया जा सकता है। उपकरण का चयन उसकी विश्वसनीयता, वैधता, आयु-उपयुक्तता और भारतीय संदर्भ में उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर किया जाना चाहिए।



11.2 जीवन कौशल मापन

जीवन कौशल मापन के लिए मान्य एवं विश्वसनीय Life Skills Scale का उपयोग किया जा सकता है।

11.3 शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि को पिछली वार्षिक परीक्षा के प्रतिशत, अर्धवार्षिक परीक्षा, विद्यालयी उपलब्धि परीक्षण या मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण से मापा जा सकता है।

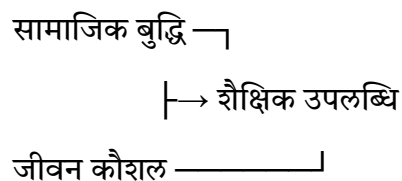
12. डेटा संग्रह प्रक्रिया

मैंने प्रस्तावित किया है कि सबसे पहले संबंधित विद्यालयों से प्रशासनिक अनुमति प्राप्त की जाए। इसके पश्चात विद्यार्थियों को अध्ययन के उद्देश्य से अवगत कराया जाए। विद्यार्थियों की पहचान को गोपनीय रखा जाना चाहिए। प्रश्नावली भरवाते समय किसी विद्यार्थी पर उत्तर देने का दबाव नहीं होना चाहिए। इसके बाद चयनित विद्यार्थियों से सामाजिक बुद्धि और जीवन कौशल संबंधी मापन कराया जाएगा तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि संबंधी वास्तविक अभिलेख प्राप्त किए जाएंगे।

13. सांख्यिकीय तकनीकें

1. Mean
2. Standard Deviation
3. Percentage
4. Pearson Product Moment Correlation
5. Independent Samples t-test
6. One-way ANOVA, जहाँ आवश्यक हो
7. Multiple Regression Analysis

14. प्रस्तावित डेटा विश्लेषण मॉडल





15. परिणामों के प्रस्तुतीकरण का प्रारूप

तालिका 1: सामाजिक बुद्धि, जीवन कौशल एवं शैक्षिक उपलब्धि के वर्णनात्मक आँकड़े

चर	N	Mean	SD
सामाजिक बुद्धि	वास्तविक N	वास्तविक Mean	वास्तविक SD
जीवन कौशल	वास्तविक N	वास्तविक Mean	वास्तविक SD
शैक्षिक उपलब्धि	वास्तविक N	वास्तविक Mean	वास्तविक SD

तालिका 2: सामाजिक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध

चर	r	p-value	निष्कर्ष
सामाजिक बुद्धि-शैक्षिक उपलब्धि	वास्तविक	वास्तविक	वास्तविक परिणाम

तालिका 3: जीवन कौशल और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध

चर	r	p-value	निष्कर्ष
जीवन कौशल-शैक्षिक उपलब्धि	वास्तविक	वास्तविक	वास्तविक परिणाम

तालिका 4: शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवाणी हेतु Regression Analysis

Predictor	β	t	p
सामाजिक बुद्धि	वास्तविक	वास्तविक	वास्तविक
जीवन कौशल	वास्तविक	वास्तविक	वास्तविक
R ²	वास्तविक	—	—



16. ग्राफ एवं चित्र

चित्र 1: सामाजिक बुद्धि-जीवन कौशल-शैक्षिक उपलब्धि का वैचारिक मॉडल।

चित्र 2: अध्ययन की अनुसंधान प्रक्रिया का Flow Chart।

चित्र 3: सामाजिक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि का Scatter Plot।

चित्र 4: जीवन कौशल और शैक्षिक उपलब्धि का Scatter Plot।

चित्र 5: बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक बुद्धि Mean Scores का तुलनात्मक Bar Graph।

चित्र 6: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल Mean Scores का तुलनात्मक Bar Graph।

चित्र 7: सामाजिक बुद्धि एवं जीवन कौशल के विभिन्न आयामों का Radar Chart।

नोट: चित्र 3-7 वास्तविक डेटा मिलने के बाद ही बनाए जाने चाहिए। बिना डेटा के काल्पनिक graphs को शोध-निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं है।

17. संभावित परिणामों की व्याख्या

मैं वास्तविक आँकड़ों के बिना कोई fabricated statistical result प्रस्तुत नहीं करूँगी। फिर भी अध्ययन की सैद्धांतिक दिशा यह है कि सामाजिक बुद्धि और जीवन कौशल का बेहतर विकास शैक्षिक व्यवहार के अनेक पक्षों से जुड़ा हो सकता है। इस संबंध को causal relationship के रूप में प्रस्तुत करने से पहले सावधानी आवश्यक है, क्योंकि पारिवारिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, विद्यालयी वातावरण, शिक्षक की गुणवत्ता, अध्ययन-अभ्यास और अभिप्रेरणा जैसे अनेक कारक भी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर सकते हैं।

18. चर्चा

मेरे अध्ययन का केंद्रीय तर्क यह है कि विद्यार्थी को केवल जानकारी प्राप्त करने वाला व्यक्ति मानना पर्याप्त नहीं है। वह एक सामाजिक एवं भावनात्मक प्राणी भी है। कक्षा में विद्यार्थी लगातार सामाजिक परिस्थितियों से गुजरता है। वह शिक्षक के निर्देशों को समझता है, साथियों के साथ संवाद करता है, प्रतिस्पर्धा का अनुभव करता है, सहयोग करता है और कभी-कभी संघर्ष का सामना करता है। यदि उसके पास पर्याप्त सामाजिक बुद्धि है, तो वह सामाजिक संकेतों को बेहतर ढंग से समझ सकता है। इसी प्रकार यदि उसके जीवन कौशल विकसित हैं, तो वह अपनी कठिनाइयों के प्रति अधिक रचनात्मक प्रतिक्रिया दे सकता है।



19. शैक्षिक निहितार्थ

1. पाठ्यक्रम में जीवन कौशलों का समावेशन किया जाए।
2. शिक्षकों को किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास से संबंधित प्रशिक्षण दिया जाए।
3. Role play, group discussion, problem-solving activities और peer learning को बढ़ावा दिया जाए।
4. विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने और अपनी बात रखने के लिए सुरक्षित वातावरण दिया जाए।
5. वास्तविक जीवन की समस्याओं पर आधारित गतिविधियों के माध्यम से निर्णय-निर्माण और critical thinking विकसित की जाए।

20. अभिभावकों के लिए सुझाव

अभिभावकों को केवल परीक्षा के अंकों पर ध्यान देने के स्थान पर बच्चों की समस्याओं को सुनना चाहिए। उन्हें बच्चों को अपनी बात व्यक्त करने, निर्णय लेने और गलतियों से सीखने का अवसर देना चाहिए। अत्यधिक तुलना और केवल परिणाम-आधारित अपेक्षाएँ विद्यार्थी के आत्मविश्वास को प्रभावित कर सकती हैं।

21. शिक्षकों के लिए सुझाव

1. विद्यार्थियों के साथ संवादात्मक व्यवहार किया जाए।
2. केवल गलत उत्तर पर ध्यान देने के स्थान पर समस्या-समाधान प्रक्रिया को महत्व दिया जाए।
3. समूह-कार्य को बढ़ावा दिया जाए।
4. विद्यार्थियों को leadership opportunities दी जाएँ।
5. classroom conflict को learning opportunity के रूप में उपयोग किया जाए।
6. विद्यार्थियों की सामाजिक एवं भावनात्मक कठिनाइयों को समझने का प्रयास किया जाए।
7. परीक्षा के साथ-साथ जीवन कौशलों के विकास को भी शैक्षिक लक्ष्य माना जाए।

22. अध्ययन की सीमाएँ

1. अध्ययन एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित हो सकता है।
2. self-report उपकरणों से response bias संभव है।
3. शैक्षिक उपलब्धि पर अनेक अन्य चर प्रभाव डाल सकते हैं।



4. cross-sectional design causal relationship स्थापित करने में सीमित हो सकता है।
5. विद्यालयी वातावरण में अंतर परिणामों को प्रभावित कर सकता है।
6. नमूने का आकार और sampling technique generalization को प्रभावित कर सकते हैं।

23. भविष्य के शोध की संभावनाएँ

1. विभिन्न राज्यों के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का अध्ययन।
4. सामाजिक बुद्धि, emotional intelligence और academic achievement का संयुक्त अध्ययन।
5. longitudinal study द्वारा जीवन कौशल के दीर्घकालीन प्रभाव का अध्ययन।
6. intervention-based study द्वारा life-skills training के प्रभाव का परीक्षण।
7. सामाजिक बुद्धि और digital/social-media behaviour के बीच संबंध का अध्ययन।
8. किशोर विद्यार्थियों में resilience और academic achievement का अध्ययन।

24. निष्कर्ष

इस अध्ययन के माध्यम से मैंने यह समझने का प्रयास किया है कि उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को केवल बौद्धिक क्षमता अथवा विषयगत ज्ञान के आधार पर नहीं समझा जा सकता। विद्यार्थी का सामाजिक व्यवहार, दूसरों को समझने की क्षमता, प्रभावी संचार, आत्म-जागरूकता, निर्णय-निर्माण, समस्या-समाधान और तनाव से निपटने की क्षमता उसके विद्यालयी जीवन को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण मनो-सामाजिक पक्ष हैं।

जीवन कौशलों को केवल स्वास्थ्य शिक्षा तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। इन्हें विद्यालयी शिक्षा के व्यापक उद्देश्य— अर्थात् विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास—का अभिन्न भाग बनाया जाना चाहिए।

हालाँकि, बिना वास्तविक field data के यह दावा नहीं किया जा सकता कि सामाजिक बुद्धि या जीवन कौशल निश्चित रूप से शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करते हैं। इस संबंध को प्रमाणित करने के लिए वास्तविक sample, validated tools और statistical analysis आवश्यक हैं। इसलिए अंतिम निष्कर्ष वास्तविक डेटा के सांख्यिकीय परिणामों के आधार पर ही निर्धारित किया जाना चाहिए।



25. संदर्भ

1. World Health Organization. Life skills education for children and adolescents in schools: Introduction and guidelines to facilitate the development and implementation of life skills programmes. Geneva: WHO.
2. World Health Organization. Life Skills Necessary for Healthy Development. WHO adolescent life-skills guidance.
3. World Health Organization. Life Skills Education School Handbook: Noncommunicable Diseases—Approaches for Schools. Geneva: WHO.
4. World Health Organization. Learning skills for life in adolescence and youth.
5. Tagat, A., Balaji, A., & Kapoor, H. (2025). The impact of life skills education on socio-emotional development and school-related outcomes among adolescents in India.
6. Mehta, N., & Kapoor, H. (2024). Validating tools to measure life skills among adolescents in India.
7. Association between Life Skills and Academic Performance in Adolescents in the Autonomous Community of Aragon (Spain).
8. Social Intelligence and Academic Achievement as Predictors of Adolescent Popularity. Journal of Youth and Adolescence.

चित्र 1: वैचारिक मॉडल

